बाल पत्रिकाओं में बच्चों के लिए जगह

प्रकाश कान्त

बाल साहित्य समीक्षा में इस बार राज्य शिक्षा केन्द्र; मध्यप्रदेश द्वारा बच्चों के लिए प्रकाशित मासिक पत्रिका 'गुल्लक' की समीक्षा की जा रही है।

पिछले दिनों मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा बच्चों के लिए प्रकाशित पत्रिका 'गुल्लक' का प्रवेशांक आया है। राज्य शिक्षा केन्द्र शिक्षकों के लिए 'पलाश' भी प्रकाशित करता है। हालांकि, 'पलाश' काफी पुरानी पत्रिका है। किसी जमाने में वह नियमित निकला करती थी। मध्य प्रदेश के शैक्षिक इतिहास पर उसके विशेषांक काफी चर्चा में भी रहे थे। बाद में चलकर इसका स्वरूप मध्य प्रदेश सरकार की तमाम छोटी-बड़ी शैक्षिक योजनाओं की जानकारी देने तक सीमित होकर रह गया। शिक्षा के गंभीर विमर्श की जिस तरह की पत्रिका वह बन सकती थी, नहीं बन पाई। उन दिनों उसके बारे में आम राय बन गई थी कि वह खैराती तौर पर शालाओं में पहुंचती तो है लेकिन वहां पढ़ना तो दूर उसकी पिन तक नहीं खोली जाती। उसे पठनीय और शिक्षा विमर्श की एक गंभीर और जरूरी पत्रिका बनाने की काफी कोशिशें की गईं लेकिन बात कुछ ज्यादा बनी नहीं। इधर वह बीच-बीच में फिर नजर आने लगी है। खैर!

'गुल्लक' मध्य प्रदेश से बच्चों के लए निकलने वाली एक तरह से तीसरी बड़ी पत्रिका है। दो अन्य पत्रिकाएं 'चकमक' और 'समझ झरोखा' रही हैं। 'चकमक' 'एकलव्य' का प्रकाशन था। वह पिछले लगभग दो दशकों से निकल रही है। बड़े प्रतिष्ठानों की बाल पत्रिकाओं के बरअक्स 'चकमक' एक बिल्कुल दूसरी तरह का प्रयास था। बल्कि कहा जाना चाहिए कि एकलव्य द्वारा किए जा रहे तमाम शैक्षिक नवाचारों का एक हिस्सा 'चकमक' भी थी। चूंकि, एकलव्य शिक्षा में एक बिल्कुल नई समझ के साथ में नई पहल कर रहा था इसलिए लाजमी था कि उसके द्वारा निकाली जाने वाली बाल पत्रिका में भी नई पहल नजर आती। उसने बच्चों को निष्क्रिय पाठकों की भूमिका से बाहर निकाला और उन्हें पत्रिका में गंभीर भागीदार बनाया। यह एक काफी बड़ा काम था। यहीं से शुरू होता था बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का किसी पत्रिका में हिस्सा बनने का सिलसिला।

बाल पत्रिकाएं भी एक ऐसी जगह हो सकती हैं जहां बच्चों की रचनात्मक भागीदारी संभव है। वैसे, चीजों से अटी पड़ी रोजमर्रा की दुनिया में बच्चों के लिए जरूरी स्पेस तेजी से सिमटा है। अजीब स्थिति है कि बच्चों के लिए बाकी सब कुछ तो है लेकिन वह जरूरी स्पेस नहीं है जहां वे अपने होने को रचनात्मक स्तर पर महसूस कर सकें। जितनी भी जगह है वह बड़ों द्वारा घेरी हुई है। बच्चों के लिए जो जगह छोड़ी और बनाई भी जाती है वहां भी निर्देश बड़ों के ही काम करते हैं। उस पर मालिकाना हक एक तरह से बड़ों का ही हुआ करता है। बच्चों की बेहतरी इसी में बताई जाती है।

बहरहाल, अपने लिए छूटी या बची रह गई ऐसी जगह, जहां बच्चे अपने को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त कर सकें, बाल पत्रिका भी हुआ करती है या कि हो

लेखक परिचय :

साहित्य में पी.एच.डी., ग्रामीण शालाओं में तीस वर्ष तक अध्यापन के बाद स्वतन्त्र लेखन।

पुस्तकें - दो उपन्यास- 'अब और नहीं', 'मक्तल', कार्ल मार्क्स के जीवन एवं विचारों पर एक पुस्तक, विभिन्न पत्रिकाओं में सौ से अधिक कहानियां प्रकाशित।

सम्पर्क :

प्रकाश कान्त
155, एल.आई.जी., मुखर्जी नगर,
देवास, मध्यप्रदेश - 455001

सकती है। यहां पारंपरिक किस्म की बाल पत्रिकाओं की बात नहीं हो रही। उनका अपनी जगह महत्त्व है। वे लम्बे समय से बच्चों की एक बड़ी जरूरत पूरी करती आ रही हैं। उनकी दृष्टि, सामग्री और प्रस्तुतीकरण को लेकर असहमति हो सकती है लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने बच्चों में पढ़ने की अभिरुचि पैदा करने और उन्हें किताबों से जोड़ने का काफी महत्त्वपूर्ण काम भी किया है। इनके सोच और स्वरूप को लेकर सामान्यतः जो आपत्तियां रही हैं उसके संदर्भ में यह याद रखा जाना भी जरूरी है कि जिस दौर में ये पत्रिकाएं शुरू हुई थीं तब वह सारा बाल विमर्श फलक पर कहीं नहीं था जो आजकल सामान्य रूप से सुनाई देता रहता है। गाइड लाइन के तौर पर बाल मनोविज्ञान की कुछेक बहुत मोटी-सी अवधारणाएं थीं। बाल पत्रिका और बाल साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाले इन्हीं को ध्यान में रखकर काम करते थे। बाद में चलकर बाल विमर्श के तहत बहुत सारी नई चीजें आईं तब उनकी आहट इन पत्रिकाओं में कुछ-कुछ सुनाई देने लगी। हालांकि, सामग्री के स्तर पर उनमें कोई बहुत बड़ा बदलाव नहीं आ गया। हमेशा की तरह कुछेक कविताएं, कहानियां, कुछ चित्र, कुछ जानकारियां और बस। इनका स्वरूप मौटेतौर पर मनोरंजक, उपदेशपरक और सूचनात्मक हुआ करता था। कहीं-कहीं उपदेश और सूचनाएं असहनीय होने की हद तक लदे रहा करते थे। और यह सब चरित्र निर्माण तथा बौद्धिक सामर्थ्य बढ़ाने के नाम पर हुआ करता था।

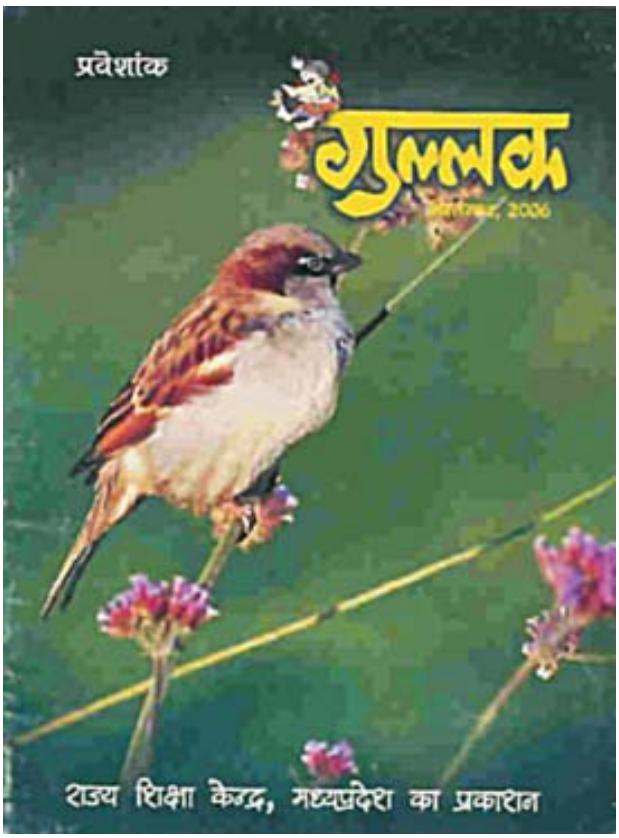

सामान्य बाल पत्रिकाओं की कविताएं-कहानियां सामान्यतः पशु-पक्षी एवं प्रकृति के अन्य अवयवों को लेकर हुआ करती हैं। इनका आमतौर पर मानवीकरण करके एक तरह से सरलीकरण कर दिया जाता है। 'चन्दामामा' जैसी बाल पत्रिकाएं लम्बे समय से पंचतंत्र, सिंहासन बत्तीसी, बेताल पच्चीसी जैसी रचनाएं सचित्र छापती आ रही हैं। जिनकी कहानियां मूलतः बडों की दुनिया की बात करती हैं। यही वजह रही कि ये पत्रिकाएं बड़ों द्वारा भी काफी पढ़ी और पसन्द की जाती रहीं। इनमें रामकथा, महाभारत और पौराणिक आख्यान तक थोकबन्द प्रकाशित हुए। दरअसल जैसा कि पहले कहा, तब बाल साहित्य को लेकर जारी मौजूदा विचार-विश्लेषण केन्द्र में नहीं था। इसीलिए मोटेतौर पर सत्साहित्य को ही बाल साहित्य मान-समझकर उसे बाल पत्रिकाओं के जरिए बच्चों तक पहुंचाया जाता रहा है। इनकी कोशिश रही है कि अपने को अधिक से अधिक पठनीय बनाया जाए। ये अन्तिम रूप से पढ़े-भर जाने के लिए थीं। बाल पाठक इनके मामले में सिर्फ ग्रहण बिन्दु (रिसिविंग एंड) पर हुआ करता था। इन्हें पढ़कर उसे मनोरंजन और ज्ञान भर प्राप्त करना था। इसके अलावा, इन पत्रिकाओं की न तो कोई और उपयोगिता थी और न पत्रिकाओं के सन्दर्भ में बच्चे की कोई दूसरी भूमिका ही थी। यहां-वहां की जाने वाली इक्का-दुक्का कोशिशों को छोड़कर। इस सूरत को सुविचारित ढंग से बदलने की लगभग पहली बार सिलसिलेवार कोशिश 'चकमक' ने की। उसने बाल पाठकों को अपना भागीदार बनाया। इसके लिए नियमित रूप से कुछ पृष्ठ बच्चों के लिए रखे जाने लगे। जिनमें बच्चों की रचनात्मक दक्षता अभिव्यक्ति पाने लगी। इस तरह से बच्चों के लिए पत्रिकाओं में जरूरी जगह निकालने-बनाने का बहुत महत्त्वपूर्ण काम शुरू हुआ।

'चकमक' बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाने की बिल्कुल शुरू से कोशिश में लगी हुई है। बच्चों के बनाए चित्र, उनकी लिखी कविताएं, कहानियां और उनके आसपास होने वाली घटनाओं के विवरण वगैरह इसमें प्रकाशित होते रहे हैं। बिल्कुल पहली बार सुदूर गांव-देहात के प्राथमिक-माध्यमिक शालाओं के बच्चों की मासूम और अकृत्रिम रचनात्मकता को व्यक्त होने का एक भरोसेमन्द मंच मिला। इससे बच्चों में एक खास किस्म का आत्म-विश्वास तो पैदा हुआ ही साथ ही साथ उन्हें आवश्यक प्रोत्साहन भी मिला। उनकी रचनात्मक सक्रियता बढ़ी। इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव उनकी शालेय अन्य गतिविधियों पर भी पड़ा। यह अध ययन का एक अलग विषय हो सकता है कि आगे चलकर जरूरी वातावरण, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन मिल पाने अथवा न मिल पाने के कारण बाल पाठकों की इस रचनात्मकता का क्या बना-बिगड़ा। उसका आगे कोई विकास भी हुआ या वह वहीं की वहीं रह गई!

बहरहाल, बाल पाठकों की रचनात्मक प्रतिभा को मंच देने,

बच्चों के लिए एक जरूरी जगह बनाने का 'चकमक' का यह प्रयास नई शुरू हुई बाल पत्रिका 'गुल्लक' में भी दिखाई दे रहा है। पत्रिका के प्रवेशांक में संपादक की ओर से बाल पाठकों से कहा गया है कि 'गुल्लक' उनके सिर्फ मनोरंजन के लिए न होकर सक्रिय भागीदारी के लिए है। इस भागीदारी का बच्चों को आग्रह पूर्वक निमंत्रण दिया गया है। और कई ऐसी चीजें रखी गई हैं जिसके जरिए बच्चे यह भागीदारी कर सकते हैं। मसलन, चित्र देखकर कहानी लिखना, दी गई अधूरी कहानी को अपनी तरफ से पूरी करना, भूल-भुलैया में रास्ता खोजना, गौरैया जैसे आसपास मिलने वाले पक्षियों के बारे में लिखना, चित्र बनाना और दी गई गतिविधियों में भाग लेना इत्यादि। इसके लिए सन्दर्भ सामग्री के रूप में पुस्तकों की भी व्यवस्था की गई है। 'चकमक' का गेटअप सामान्यतः श्वेत-श्याम था। 'गुल्लक' का रंगीन है। सिर्फ रंगीन ही नहीं बल्कि आकर्षक भी है। वैसे, उपर्युक्त सामग्री के अलावा जो जानकारी पूर्ण सामग्री दी गई है उसके लेखन और प्रस्तुतीकरण को लेकर बहस हो सकती है। यूं भी, बाल पत्रिकाओं के साथ यह आम समस्या रही है कि वे अपने हल्के-फुल्के तौर-तरीकों के बीच अचानक बहुत गंभीर मुद्रा धारण करने लगती हैं। उन्हें अपने हल्के-फुल्के होने पर जैसे झेंप आती है। इसलिए सब कुछ जब ठीक-ठाक चल रहा होता है तब वे बीच में अचानक और लगभग अकारण बिल्कुल अनावश्यक रूप से गंभीर होने लगती हैं। अगर गंभीरता के इस मोह से थोड़ा-सा मुक्त रहा जा सके तो ऐसी पत्रिकाएं बच्चों के लिए काफी बड़ा काम कर सकती हैं। 'चकमक' का उद्देश्य था 'बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना। जबकि 'गुल्लक' अपने को देखने, अपने साथ खेलने और 'जब मन करे तब अपनी गुल्लक से कुछ इसे देने और कुछ इससे ले लेने का आग्रह करती है। उसके इस आग्रह में एक किस्म की दार्शनिकता भी है। इसका संपादन किया है गुरबचन सिंह ने जबकि सहयोगी रहे हैं राजेश उत्साही। पत्रिका चूंकि सभी सरकारी शालाओं में पहुंचाए जाने के लिए है इसलिए जाहिर है कि उसका क्षेत्र व्यापक है। अब देखा जाना है कि वह अपने संकल्पों का निर्वाह करते हुए कितनी दूर तक जा पाती है !

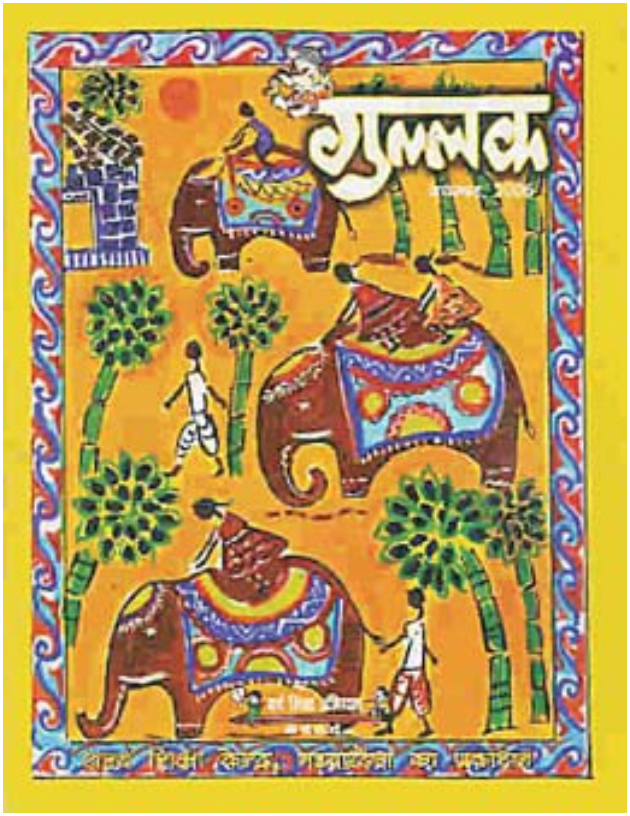

गुल्लक के दूसरे अंक में भी बच्चों की रचनात्मक हिस्सेदारी का निर्वाह किया गया है। पिछले अंक में गौरेया थी। इस बार कबूतर के बारे में कुछ रोचक जानकारियां देकर बच्चों को कबूतर के बारे में अवलोकन के जरिए दूसरी जानकारियां जुटाने को कहा गया है। शेर एवं खरगोश का चित्र देकर नये बोध की कहानी और इसी तरह से मछली का चित्र देकर कविता लिखने का निमंत्रण दिया गया है। चयनित रचनाओं का प्रकाशन अगले अंकों में किए जाने के आश्वासन के साथ। इसके अलावा, बच्चों के बनाए चित्र एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित सामग्री इस बार भी है ही। ऐसी सामग्री बाल पाठकों को पत्रिका के बाहर भी सक्रिय होने के लिए प्रेरित करती है। ऐसा करते हुए पत्रिका बच्चों की सर्जनात्मकता के लिए एक नया और बड़ा स्पेस बनाती है।

पत्रिका के इस अंक में कुछ अन्य समसामयिक सामग्री का समावेश भी किया गया है। शहनाई वादक स्व. बिस्मिल्ला खां पर श्रद्धांजलि स्वरूप एक जानकारी पूर्ण लेख, रवीन्द्रनाथ और बंकिम चन्द्र के चित्रों के साथ राष्ट्रगान तथा राष्ट्रगीत, लेव तोलस्तोय और ख्वाजा अहमद अब्बास की कहानियां, एक ग्रह के रूप में सौर परिवार से प्लूटो की बेदखली की घटना के संदर्भ में प्लूटो का परिचय इत्यादि जैसी सामग्री इसी तरह की है। गुल्लक पुस्तकालय में बच्चों की रुचि एवं उपयोग की पुस्तकों की परिचयात्मक जानकारी है। जो बच्चों को अपनी पुस्तकें चुनने में मदद कर सकती है।

बहरहाल, 'गुल्लक' के इन दो अंकों को देखकर कहा जा सकता है कि वह बाल पाठक के भीतरी संसार को समृद्ध करने की कोशिश में है। साथ ही, इस पाठक की सर्जनात्मकता के विकास के लिए अपने भीतर जगह बनाती हुई चल रही है। ◆